International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भोपाल जिले के फंदा विकास खंड के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन

मुकेश चंद्र शर्मा
शोधार्थी, समाजशास्त्र, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र,
शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शोधार्थी ने सर्वेक्षण के माध्यम से भोपाल जिले के फंदा विकास खंड के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन पर शोध किया। भोपाल जिले के फंदा विकास खंड के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 200 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों को जानने हेतु स्वनिर्मित 'मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव की जानकारी' की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत एवं काई वर्ग परीक्षण के माध्यम से कर परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया एवं निष्कर्षों में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों में सभी परिकल्पनाओं में समानताएं प्रदर्शित हो रही है।

मुख्य शब्द : शासकीय माध्यमिक विद्यालय, मध्यान्ह भोजन योजना

प्रस्तावना :–

मानव क्षमता के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। राज्य सरकारें अपने सीमित संसाधनों का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत देश भर में शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए समर्पित करती हैं। इन प्रयासों के बावजूद, समाज में चल रही सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता के कारण प्रारंभिक शिक्षा के 100 प्रति. सार्वभौमिकरण का लक्ष्य एक लंबा रास्ता तय करता प्रतीत होता है। 14 साल की उम्र तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा एक संवैधानिक प्रतिबद्धता है, और यह अनुमान है कि प्राथमिक स्कूल के बच्चों (6–14 वर्ष) की कुल आबादी का लगभग 20 प्रति. हिस्सा है। निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के अधिकांश बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं, और कई कम उम्र में स्कूल छोड़ देते हैं, जो उनके समग्र विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

खराब स्कूल उपस्थिति और एक उच्च ड्रॉपआउट दर बच्चों की खराब पोषण स्थिति से जुड़ी हुई है, जो खराब सामाजिक आर्थिक स्थितियों, बाल श्रम और प्रेरणा की कमी से बढ़ जाती है। प्राथमिक शिक्षा के

लिए पोषण संबंधी सहायता को 14 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को संतोषजनक गुणवत्ता की मुफ्त और अनिवार्य सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा जाता है, जिसमें नामांकन में वृद्धि, स्कूल में उपस्थिति में सुधार, प्रतिधारण, और साथ ही प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की पोषण स्थिति।

मध्याह्न भोजन कार्यक्रम (एमडीएमपी) भारत में पहली बार लगभग एक सदी पहले लागू किया गया था। 1925 में, पूर्व मद्रास कॉर्पोरेशन ने सबसे पहले स्कूल लंच कार्यक्रम शुरू किया था। हालांकि, लगभग 50 साल बाद तक सरकार ने इस तरह के कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर काफी महत्व दिया था। 1974 में, बच्चों पर देश की राष्ट्रीय नीति ने मान्यता दी कि बच्चे बुनियादी शिक्षा के लिए देश के सबसे मूल्यवान मानव संसाधन हैं। 1995 में स्कूलों में मिड–डे मील (एमडीएम) कार्यक्रम लागू किया गया था। इस कार्यक्रम का लक्ष्य प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के पोषण को प्रभावित करते हुए प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को बढ़ावा देना था। दिल्ली के केंद्र शासित प्रदेश ने उस अवधि के बारे में एक मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की स्थापना की। 2004 में, कार्यक्रम में संशोधन किया गया था, और संघीय सरकार ने अपने सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम में इसके निष्पादन को प्राथमिकता दी थी। मिड डे मील प्रोग्राम (एमडीएमपी) दुनिया का सबसे बड़ा सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम है, जिसमें देश भर के 12.12 लाख प्राथमिक स्कूलों में 10.44 मिलियन बच्चे नामांकित हैं। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए इस विशाल कार्यक्रम का प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

कौसर एंड विजार्ट (2009) के अनुसार, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का लक्ष्य लाभार्थियों, विशेष रूप से कम आय वाले परिवारों के बच्चों के नामांकन, प्रतिधारण और सीखने की क्षमता को बढ़ावा देना है। उन्होंने पाया कि मध्याह्न भोजन से कुछ जिलों में छात्र नामांकन में वृद्धि हुई और स्कूल में छात्र नियमितता में वृद्धि हुई। यह अध्ययन पत्र पॉल पी.के. और मंडल एन.के. (२०१२) पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले में एक चयनित उच्च प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की प्रकृति और प्रभाव की जांच करना। नतीजतन, उन्होंने पाया कि मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सामाजिक स्तर पर काफी अनुकूल प्रभाव पड़ा है।

समस्या कथन :–

भोपाल जिले के फंदा विकास खंड के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मध्याह्न भोजन योजना को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
2. छात्रों पर मध्याह्न भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

परिकल्पना क्रमांक 01. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 02. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है?', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 03. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 04. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने स्वनिर्मित मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव से संबंधित जानकारी की प्रश्नावली का निर्माण किया है, जिसमें शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से मध्यान्ह भोजन योजना के सामाजिक प्रभाव से संबंधित प्रश्नों को प्रश्नावली में पूछा गया है। प्रश्नावली के निर्माण में विषय विशेषज्ञों से विचार–विमर्श कर उनके द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करके इस उपकरण का निर्माण किया गया है। उपकरण की सामग्री वैधता, पद वैधता व निमार्णात्मक वैधता का विश्लेषण विषय विशेषज्ञों के निर्देश पर किया गया स्वनिर्मित सामाजिक प्रभाव से संबंधित जानकारी की प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए अर्ध–विच्छेद विधि एव पूर्व–पश्च परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रतिशत एवं काई वर्ग परीक्षण द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना क्रमांक 01. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी क्रमांक 01

'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	कुल संख्या	प्रतिक्रिया						'काई वर्ग' मान	सार्थकता
		हां		पता नहीं		नहीं			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
शिक्षक	100	77	77	10	10	13	13	2.81	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिकाएं	100	69	69	09	09	22	22		

स्वतंत्रता के अंश – 02 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 5.991

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों की जानकारी लेने पर 77 प्रतिशत शिक्षक एवं 69 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'हां' कहा है। वही 13 प्रतिशत शिक्षक एवं 22 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'नहीं' कहा है एवं 10 प्रतिशत शिक्षक एवं 09 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के प्रति 'पता नहीं' में अपनी प्रतिक्रिया दी है। प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाआ के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', की जानकारी के लिए प्राप्त 'काई वर्ग' का मान 2.81 स्वतंत्रता के अंश 02 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित मान 5.991 की अपेक्षा कम है, जो सार्थक नहीं है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (77 प्रतिशत शिक्षक एवं 69 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। प्राप्त 'काई वर्ग' परीक्षण के मान से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है' की जानकारी में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है' के विषय में मत भिन्नताएँ नहों पाई गईं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक 02. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है?', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी क्रमांक 02

'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है?', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	कुल संख्या	प्रतिक्रिया						'काई वर्ग' मान	सार्थकता
		हां		पता नहीं		नहीं			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
शिक्षक	100	88	88	03	03	09	09	1.71	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिकाएं	100	85	85	07	07	08	08		

स्वतंत्रता के अंश – 02 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 5.991

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है?', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों की जानकारी लेने पर 88 प्रतिशत शिक्षक एवं 85 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'हां' कहा है। वहीं 09 प्रतिशत शिक्षक एवं 08 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'नहीं' कहा है एवं 03 प्रतिशत शिक्षक एवं 07 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के प्रति 'पता नहीं' में अपनी प्रतिक्रिया दी है। प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', की जानकारी के लिए प्राप्त 'काई वर्ग' का मान 1.71 स्वतंत्रता के अंश 02 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित मान 5.991 की अपेक्षा कम है, जो सार्थक नहीं है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (88 प्रतिशत शिक्षक एवं 85 प्रतिशत शिक्षिकाओं)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ने 'हां' में उत्तर दिया है। प्राप्त 'काई वर्ग' परीक्षण के मान से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', की जानकारी में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के विषय में मत भिन्नताएँ नहीं पाई गईं।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक 03. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी क्रमांक 03

'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	कुल संख्या	प्रतिक्रिया						'काई वर्ग' मान	सार्थकता
		हां		पता नहीं		नहीं			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
शिक्षक	100	71	71	15	15	14	14	5.15	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिकाएं	100	83	83	06	06	11	11		

स्वतंत्रता के अंश – 02 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 5.991

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों की जानकारी लेने पर 71 प्रतिशत शिक्षक एवं 83 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'हां' कहा है। वहीं 14 प्रतिशत शिक्षक एवं 11 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'नहीं' कहा है एवं 15 प्रतिशत शिक्षक एवं 06 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के प्रति 'पता नहीं' में अपनी प्रतिक्रिया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दी है। प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', की जानकारी के लिए प्राप्त 'काई वर्ग' का मान 5.15 स्वतंत्रता के अंश 02 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित मान 5.991 की अपेक्षा कम है, जो सार्थक नहीं है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (71 प्रतिशत शिक्षक एवं 83 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। प्राप्त 'काई वर्ग' परीक्षण के मान से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', की जानकारी में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के विषय में मत भिन्नताएँ नहीं पाई गईं।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक 04. 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी क्रमांक 04

'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	कुल संख्या	प्रतिक्रिया						'काई वर्ग' मान	सार्थकता
		हां		पता नहीं		नहीं			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
शिक्षक	100	65	65	23	23	12	12	5.87	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिकाएं	100	58	58	17	17	25	25		

स्वतंत्रता के अंश – 02 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 5.991

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों की जानकारी लेने पर 65 प्रतिशत शिक्षक एवं 58 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'हां' कहा है। वहीं 12 प्रतिशत शिक्षक एवं 25 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के लिए 'नहीं' कहा है एवं 23 प्रतिशत शिक्षक एवं 17 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस बात के प्रति 'पता नहीं' में अपनी प्रतिक्रिया दी है। प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', की जानकारी के लिए प्राप्त 'काई वर्ग' का मान 5.87 स्वतंत्रता के अंश 02 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित मान 5.991 की अपेक्षा कम है, जो सार्थक नहीं है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (65 प्रतिशत शिक्षक एवं 58 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। प्राप्त 'काई वर्ग' परीक्षण के मान से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाआ के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', की जानकारी में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के विषय में मत भिन्नताएँ नहीं पाई गईं।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के विभिन्न मतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। स्वीकृत की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष :–

1. परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (77 प्रतिशत शिक्षक एवं 69 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश अध्यापक (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) इस बात से सहमत हैं कि मध्यान्ह भोजन से जातिवाद कम हुआ है। 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से जातिवाद कम हुआ है', के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देने वाले सभी अध्यापका (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के प्रति उत्तरों में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों में समानताएं पाई गईं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (88 प्रतिशत शिक्षक एवं 85 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश अध्यापक (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) इस बात से सहमत हैं कि मध्यान्ह भोजन से सामाजिक समरसता बढ़ी है। 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से सामाजिक समरसता बढ़ी है', के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देने वाले सभी अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के प्रति उत्तरों में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों में समानताएं पाई गईं।
3. परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (71 प्रतिशत शिक्षक एवं 83 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश अध्यापक (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) इस बात से सहमत हैं कि मध्यान्ह भोजन से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है। 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से शाला में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नामांकन में सुधार हुआ है', के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देने वाले सभी अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के प्रति उत्तरों में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों में समानताएं पाई गईं।
4. परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि कि 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के बारे में अधिकांश अध्यापकों (65 प्रतिशत शिक्षक एवं 58 प्रतिशत शिक्षिकाओं) ने 'हां' में उत्तर दिया है। अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश अध्यापक (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) इस बात से सहमत हैं कि मध्यान्ह भोजन से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है। 'क्या मध्यान्ह भोजन योजना से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है', के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया दने वाले सभी अध्यापकों (शिक्षक एवं शिक्षिकाएं) के प्रति उत्तरों में वास्तविक एवं सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मतों में समानताएं पाई गईं।

संदर्भ सूची :–

- क्रो एण्ड क्रो (1951) एन इंट्रोडक्शन टू गाइडेंस, न्यूयार्क : अमेरिकन बुक कंपनी।
- अस्थाना, विपिन (1999) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

- गोहन, आइसेल एंड एट.आल 2009 मेटाकॉग्निशन स्टडी हैबिट एंड एटीट्यूड्स। डिजर्टेशन अबस्ट्रैक्ट इंटरनेशनलए 76 (1) 19–29
- गीता, एस तथा विजयालक्ष्मी, ए. 2006 इंपैक्ट ऑफ इमोशनल मैच्युरिटी ऑन स्ट्रेस एण्ड सेल्फ कान्फिडेंस ऑफ एडोल्सेंट्स। जर्नल ऑफ दी इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजीए 32 (1) 69–75
- गुरूवासप्पा. एच.डी. 2009 इंटेलीजेंस एण्ड सेल्फ कॉन्फिडेंस एंड कोरिलेशन ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स। एडुट्रैक्स Vol-8, (2009) PP. 42–43
- शर्मा, आर.ए. (2006), शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर. लाल बुक डिपो
- झा, जे. और झिंगरान, डी. (2005); सबसे गरीब और अन्य के लिए प्राथमिक शिक्षा वंचित समूह; नई दिल्ली मनोहर पब्लिशर्स
- वेंकटेश, एन. (2005); प्राथमिक शिक्षा; नई दिल्ली; अनमोल प्रकाशन
- संचेती, डीसी और कपूर, वी.के (2005); सांख्यिकी (सिद्धांत, तरीके और अनुप्रयोग); सुल्तान चंद एंड संस; नई दिल्ली; शैक्षिक प्रकाशक